4 उठो, धरा के अमर सपूतों

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जन्म पहली दिसंबर 1916 को रोहता, आग्रा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। 29 अगस्त 1998 में उनकी मृत्यु हुई। उनके छः काव्यसंग्रह और दो खंडकाव्य, छब्बीस बाल साहित्य, तीन कहानी संग्रह तथा अन्य साहित्य भी प्रकाशित हैं। 'इतना ऊँचा उठो', 'उठो धरा के अमर सपूतो', 'कौन सिखाता है चिड़ियों को', 'चंदा मामा आ', 'पुनः नया निर्माण करो', 'माँ!', 'यह वसंत ऋतु', 'हम सब सुमन एक उपवन के' उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

प्रस्तुत काव्य में प्रकृति के तत्त्वों से प्रेरणा लेकर अपने ज्ञान का उपयोग कर देश के सपूतों को नवनिर्माण करने का संदेश दिया है।

उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से नवस्फूर्ति, नव प्राण भरो॥
नयी प्रातः है, नयी बात है,
नयी किरण है, ज्योति नयी।
नयी उमंगें, नयी तरंगें,
नयी आस है, साँस नयी॥
युग-युग के मुरझे सुमनों में नयी-नयी मुस्कान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ,
नये स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में नया राग, नव गान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥
कली-कली खिल रही इधर;
वह फूल-फूल मुस्काया है।

धरती माँ की आज हो रही,
नयी सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से, गुंजित जग-उद्यान करो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥
सरस्वती का पावन मंदिर,
शुभ सम्पत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के, नवयुग का आह्वान करो।
उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो॥

शब्दार्थ

निर्माण बनाना **गुंजित** भौंरों के गुंजार से युक्त **प्रायः** अक्सर **उद्यान** बाग **पुनः** फिर दोबारा **आह्वान** ललकार, चुनौती **स्फूर्ति** उत्साह

अभ्यास

1. आशय स्पष्ट कीजिए :

"युग-युग के मुरझे सुमनों में
नयी-नयी मुस्कान भरो।
उठो धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो॥"

2. कवि ने देश के सपूतों को क्या संदेश दिया है ?

3. हमारी राष्ट्रीय संपत्ति कौन-कौन सी है ? उसकी सुरक्षा के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ?

W8Z4B1

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि माहेश्वरीजी धरा के अमर सपूतों से क्या चाहते हैं ?

(2) कवि नई मुस्कान कहाँ देखना चाहते हैं ?

(3) देश के नवनिर्माण के लिए आप क्या-क्या करना चाहेंगे?

(4) इस कविता में कौन-सी बातें हैं, जिन्हें तुम अपने जीवन में उतारना चाहोगे ?

2. दिए गए काव्य को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खड़ा हिमालय बता रहा है, डरो न आँधी पानी में,
डटे रहो तुम अपने पथ पर, कठिनाई–तूफानों में।
डिगो न अपने पथ से तुम, तो सबकुछ पा सकते हो प्यारे,
तुम भी ऊँचे उड़ सकते हो, छू सकते हो नभ के तारे।
अटल रहा जो अपने पथ पर, लाख मुसीबत आने में,
मिली सफलता उसको जग में, जीने में मर जाने में।
जितनी भी बाधाएँ आईं, उन सब से ही लड़ा हिमालय,
इसीलिए तो दुनिया भर में, हुआ सभी से बड़ा हिमालय।

प्रश्न :

(1) हिमालय हमें क्या संदेश देता है ?

(2) मुसीबत आने पर हमें क्या करना चाहिए ?

(3) कवि ने हिमालय को सबसे बड़ा क्यों कहा है ?

(4) इस काव्य का भावार्थ लिखिए।

(5) इस काव्य को योग्य शीर्षक दीजिए।

3. चित्र के आधार पर कविता लिखिए, जिसमें निम्नलिखित शब्दों का उपयोग हुआ हो :

(फूल, तितली, बादल, वृक्ष, बारिश)

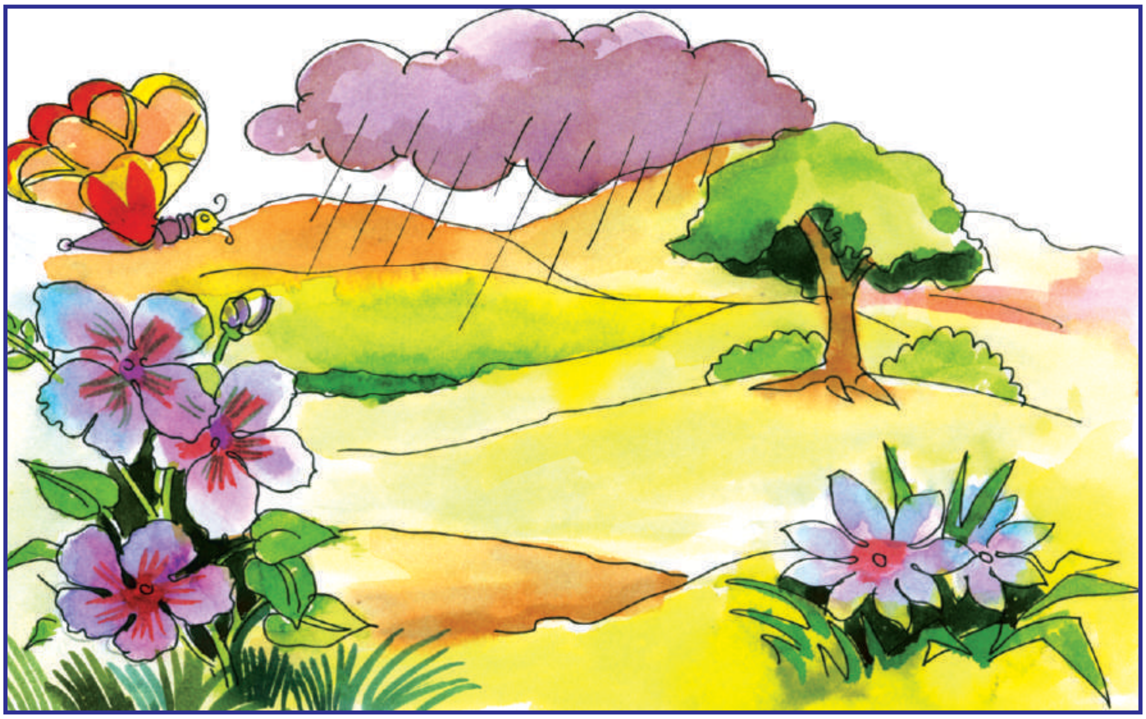

4. अपूर्ण काव्य को पूर्ण कीजिए :

माँ खादी की चद्दर दे दो,
मैं गाँधी बन जाऊँगा.....

भाषा-सज्जता

संज्ञा का प्रयोग

आप 'संज्ञा' के बारे में सीख चुके हैं।

→ **निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा ढूँढ़कर उसका भेद बताइए।**

- सोना कीमती धातु है।
- गंगा पवित्र नदी है।
- उमंग दौड़ रहा है।
- दल जा रहा है।
- राजेश भय के कारण जंगल में नहीं गया।

→ **निम्नलिखित विधान पढ़िए और समझिए :**

- जयेश ने कीर्ति को साड़ी दी।
- जयेश ने कीर्ति को साड़ियाँ दीं।
- बगीचे में एक लड़का है।
- बगीचे में कई लड़के हैं।

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ने से पता चलता है कि पहले वाक्य में 'साड़ी' से 'साड़ियाँ' और दूसरे में 'लड़का' से 'लड़के' हो गया है। यानी एकवचन का बहुवचन हुआ है। अब आप इसी तरह निम्नलिखित एकवचन वाक्य को बहुवचन में परिवर्तित कीजिए :

(1) मुझे लुटेरे का डर था।

(2) पक्षी ने उड़ान भरी।

(3) उसने मुझे मिठाई दी।

→ **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए और वाक्य में गाढ़े काले शब्द को समझिए :**

भाववाचक संज्ञा के रूप में	**जातिवाचक संज्ञा के रूप में**
(1) बच्चे **प्रार्थना** करते हैं।	बच्चों की **प्रार्थनाएँ** बेकार नहीं जातीं।
(2) नदी की **चौड़ाई** अधिक है।	भारत में नदियों की **चौड़ाइयाँ** अधिक हैं।

उपर्युक्त वाक्य पढ़ने से पता चलता है कि पहले वाक्य में गाढ़ा शब्द प्रार्थना था जो भाववाचक रूप में था, उनके साथ दिए वाक्य में प्रार्थना को 'एँ' प्रत्यय लगाने से 'प्रार्थनाएँ' संज्ञा जातिवाचक संज्ञा बन गई।

इतना जानिए

भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग सदैव एकवचन में किया जाता है। बहुवचन में प्रयुक्त किए जाने पर ये जातिवाचक संज्ञाओं का रूप ले लेती हैं।

उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित भाववाचक संज्ञाओं को जातिवाचक संज्ञा में परिवर्तित करके वाक्य फिर से लिखिए :

(1) विज्ञान ने **दूरी** को कम किया है।

(2) नदी की **लम्बाई** अधिक है।

योग्यता-विस्तार

- **छात्र के लिए**

  शिक्षक की मदद से प्रकृति के तत्त्वों पर आधारित काव्यों का संकलन कीजिए।